take into account every possible consideration to see that nothing is disrupted.

SHRI GHULAM RASOOL MATTOO: Mr. Chairman, Sir, the hon. Minister in his reply stated that 4,500 people have opted for the British citizenship voluntarily on their own volition. Now, that has been exercised by them at a particular point of time. Can't they re-exercise that option now and the Government of India will accept that option or give due consideration to that?

SHRI K. NATWAR SINGH: Sir, when this particular problem comes up, we will look at it.

Prospects for breeding of silk worms in North Bihar

*184. SHRI S. S. AHLUWALIA: Will the Minister of TEXTILES be pleased to state:

(a) whether it is a fact that natural environment in the Western and Eastern Champaran Districts of North Bihar provide good prospects for breeding of silk worms;

(b) if so, what steps Government have taken or propose to take to increase silk production in these districts; and

(c) what is the number of entrepreneurs who have so far applied for setting up their silk-based industries in these areas?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF TEXTILES (SHRI RAM NIWAS MIRDHA): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Yes, Sir.

(b) State Government of Bihar has set up the following units in East Champaran & West Champaran districts to increase silk production.

1. Two Mulberry Extension-cum-Training Centres at Mothihari & at Betiah.

2. Four Eri, Demostration Centres at Majhauan, Bagaha, Turkaulia and Mahesi.

3. One Basic Seed Supply Station at Balmikinagar.

In order to supplement the State Government's efforts and to provide R&D support, the Central Silk Board has set up 2 Regional Sericulture Research Stations, 2 Extension Centres and a Grainage-cum-Extension Centre in the State.

(c) According to information received from the State Government no entrepreneur has applied for setting up silk-based industries in these districts, so far.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : सभापति महोदय, बिहार हिन्दुस्तान के कुल टसर सिल्क का 58 परसेंट पैदा करता है। मैं आपके माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि जिस तरह से कर्नाटक में वर्ल्ड बैंक से सिल्क डेवलपमेंट सेंटर खोलने के लिए कुछ व्यवस्था की गयी है, उसी तरह की व्यवस्था क्या बिहार राज्य के लिए भी की जा रही है या नहीं ?

SHRI RAM NIWAS MIRDHA: Mr. Chairman, Sir, Bihar is a major producer of silk and accounts for as much as 70 per cent of the silk produced which is much more than what the hon. Member has mentioned. Sir, we are conscious of the importance of Bihar in this respect and have taken vraious steps, some of which I have mentioned in my answer to see that tusser silk production is properly organised, efficiency is increased and northern Bihar is enabled to play an important role.

Sir, the Central Silk Board have established a Central Research and Training Institute at Ranchi which exclusively deals with tusser silk which is a National Apex Organization for tusser silk and it has a lot of extension and other centres established by the Central Silk Board.

Sir, as regards World Bank assistance, the Karnataka Government had made a

proposal for World Bank assistance in silk development of more than a hundred crores of rupees, Rs. 101 crores to be precise and it was a State Government sponsord project which is now over and it has given good results and if the Government of Bihar comes out with some such proposition, we would be happy to help them in every possible way. But Sir, apart from that, we have a number of schemes and Bihar Government have also taken a number of steps to see that tusser silk is promoted in the State, not only tusser silk but mulberry and other types of silk is also promoted. Apart from this, we had inter-state tusser project costing Rs. 10.50 crores in which also, Bihar Government had a share of benefit and I think, enough schemes exist for the promotion of silk in Bihar.

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलूवालिया : सभापति महोदय, मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि बिहार के आदिवासी इलाकों में खास करके टसर सिल्क के उत्पादन के साथ साथ उन्हें इम्पलाईमेंट मिलने का जो सुयोग मिलता है उस संबंध में मंत्री महोदय बताने की कृपा करें कि ऐसे इलाकों में सप्तम पंचवर्षीय योजना खत्म होने तक कितने लोगों को इम्पलाईमेंट मिलने की संभावना है और हमारा अल्टीमेट टारगेट कितना रहा है ?

श्री राम निवास मिर्धा : सभापति महोदय, दक्षिण बिहार क्षेत्र में रांची इत्यादि क्षेत्र में जैसे कि माननीय सदस्य ने उल्लेख किया है वहां पर काफी योजनायें हैं और जैसे मैंने पहले बताया है कि सेंट्रल टसर रिसर्च ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट रांची इस क्षेत्र में काम कर रहा है जिसके बारे में माननीय सदस्य ने अभी उल्लेख किया। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि कितना उत्पादन होगा और कितना इससे रोजगार मिलेगा। इसके आंकड़े कोई राज्य सरकार ने या हमने बनाए हुए हैं ऐसी बात नहीं है। हम यह आशा करते हैं कि यह जो सारी योजनायें हैं जिस में एक्सटेंशन सेंटर्ज भी है, रामेटीरियल बैंक भी है, रिसर्च सबस्टेशन भी हैं और इन संस्थाओं की वहां पर काफी व्यवस्था है इन सब की वजह से काफी विकास होता और संतोषनजक प्रगति इस में होगी।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : सभापति, महोदय, प्रश्न एक सीमित क्षेत्र का है और जवाब सब छोटा नागपुर का है। मैं माननीय मन्त्री जी से यह जानना चाहूंगा कि जब से केन्द्रीय रेशम बोर्ड का मुख्यालय बम्बई से हटा कर के कर्नाटक में ले जाया गया है तब से उत्तरी भारत में जो रेशम का उत्पादन विशेषकर मलबरी क्षेत्र में आगे बढ़ा था और आसाम में जो मूंगा का उत्पादन और एअरी का उत्पादन होता था उसकी हालत दयनीय हो गई है। यहां तक कि बोर्ड का अध्यक्ष भी नहीं बनाया है इसलिए केन्द्रीय बोर्ड को जो कार्य करना चाहिए वह कार्य भी नहीं हो पा रहा है। मैं आपसे प्रश्न के उत्तर के संदर्भ में जानना चाहता हूं कि विकास के काम मोतिहारी तथा बेतिहा दोनों जिलों में बताए गये हैं वह कौन से सिल्क के हैं टसर सिल्क पर, एअरी पर, मलबरी पर यह योजनायें किन किन सिल्को पर चल रही हैं। जिन योजनाओं का आपने उल्लेख किया है अपने अनुसंधान केन्द्रों में उन पर आपका साल ना कितना खर्च होता है और जो मूल बीज केन्द्र हैं उससे कितना उत्पादन होता है बीज का और वितरण इस में से कितना होता है ? इस क्षेत्र में जो सिल्क उत्पादन होता है उस का सालाना उत्पादन कितना है ?

श्री राम निवास मिर्धा : श्रीमन्, माननीय सदस्य की यह धारणा सही नहीं है कि सेंट्रल सिल्क बोर्ड के बंगलौर में होने की वजह से उत्तर भारत में जो रेशम का क्षेत्र है, रेशम उद्योग है उसको आगे बढ़ाने में कोई दिक्कत आई है। जैसे मैंने बताया है कि बिहार में मुख्य रूप से टसर किस्म का रेशम होता है और उस के लिए राष्ट्रीय और केन्द्रीय रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट है, वह रांची में है ...

(व्यवधान)

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : यह तो बहुत पहले से है, यह आज का बना हुआ नहीं है । जब सेंट्रल सिल्क बोर्ड म्बई में था . . . (व्यवधान)

श्री रामनिवास मिर्धा : कहीं बना हुआ हो, कभी बना हुआ हो इससे उसकी गतिविधियां हमेशा बढ़ती रहती है, सब-सेंटर्ज कायम होते रहते हैं, हर प्लान में बढ़ोत्तरी होती रहती है (व्यवधान) Moonga silk is a different problem and it is mostly in north-eastern area, not Bihar. It is not very important so far as Moonga is concerned. As regards Motihar and Betiah,

राज्य सरकार उसको चला रही है, राज्य सरकार डिमोंस्ट्रेशन सेंटर्ज चला रही है जिनकी संख्या 4 है । जैसे कि थेने पहले अपने उत्तर में उल्लेख किया है एक सीड सप्लाई सेंटर बालमिकि नगर में चल रहा है। रेशम का उत्पादन किस प्रकार बढ़े राज्य सहकार उस में मुख्य रूप से दिलचस्पी लेती है और जो भी योजनाएं हमारे पास भेजती है सेंट्रल सिल्क बोर्ड उस पर मदद करता है। (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: I think the Minister has answered enough. We go to the next question.

*185. [*The questioners (Shri Chitta Basu and Shri Ramkrishna Mazumder) were absent for answer* vide *col.* 31 *infra*].

*186. [*The questioner (Shri B. Satyanarayan Reddy) was absent. For answer,* vide *col.* 32 *infra*].

Development of Tourism in the Northern region

*187. SHRI SURENDRA SINGH THAKUR: Will the Minister of TOURISM be pleased to state:

(a) whether the development of tourism in the Northern region is slow;

(b) if so, what are the reasons therefor and what steps have been taken by Government in this regard;

(c) whether infrastructural facilities are available for development of tourism in this region;

(d) if not, what steps have been taken by Government to extend infrastructural facilities; and

(e) what are the details of projects undertaken for development of tourism in the Northern region in the recent past?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF TEXTILES (SHRI RAM NIWAS MIRDHA): ON BEHALF OF THE MINISTER OF TOURISM: (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

(c) Yes, Sir.

(d) Does not arise.

(e) (*See* Appendix CXLI, Annexure No. 63.)

श्री सुरेन्द्र सिंह ठाकुर : सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से यह जानना चाहता हूं कि हिमालय पर्यटन संसाधनों को प्रयोग कर के पर्वतीय स्थलों में पर्यटन के विकास की दिशा में एडवेंचर स्पोर्ट टयूरिज्म के विकास हेतु ट्रेकिंग वाइल्ड लाइफ तथा विंटर स्पोर्ट्स के विकास की दिशा में सातवीं पंचवर्षीय योजना के पिछले दो वर्षों में सरकार की क्या उपलब्धियां रही हैं और उसके इस दिशा में क्या क्या काम हैं ?

श्री रामनिवास मिर्धा : श्रीमन्, मैंने अपने उत्तर में विस्तृत तरीके से छठी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन विकास के लिये क्या किया गया है और सातवीं पंचवर्षीय योजना के प्रथम दो वर्षों में क्या क्या किया गया है, उसका पूरा उल्लेख किया है। जम्मू और काश्मीर के क्षेत्र में एक तो मिसाल मैं आपके सामने रखना चाहूंगा कि गुलमर्ग में विन्टर स्पोर्ट प्रोजक्ट चलना चाहिये । किस प्रकार से उसके इक्वपमेंट्स की खरीदारी होनी चाहिये, ट्रेकिंग इक्विपमेंट्स की खरीदारी होनी चाहिये, ये सब योजनायें हैं वे केन्द्रीय मंत्रालय ने राज्य सरकार को मदद कितनी दी है, कितना अमाउंट